हिंदी विश्व

11वें विश्व हिंदी सम्मेलन पर केंद्रित दैनिक समाचार पत्र

11वां विश्व हिंदी सम्मेलन
मॉरीशस, 18-20 अगस्त, 2018

गोस्वामी तुलसीदास नगर, मॉरीशस | मंगलवार, 21 अगस्त 2018 | अंक - 4

हिंदी बने संयुक्त राष्ट्र संघ की सातवीं आधिकारिक भाषा : परमशिवम् पिल्लै वायापुरी

मॉरीशस के कार्यवाहक राष्ट्रपति के वक्तव्य से हुआ सम्मेलन का समापन

गोस्वामी तुलसीदास नगर, मॉरीशस। 20 अगस्त 2018 को अभिमन्यु अनत सभागार में 11वें विश्व हिंदी सम्मेलन का समापन समारोह संपन्न हुआ। इस अवसर पर परमशिवम् पिल्लै वायापुरी, कार्यवाहक राष्ट्रपति, मॉरीशस गणराज्य मुख्य अतिथि के रूप में तथा अनिरुद्ध जगन्नाथ मार्गदर्शक और रोड्रिग्स मंत्री उपस्थित थे। साथ ही सुषमा स्वराज, लीला देवी दूकन-लछूमन व मृदुला सिन्हा, केशरी नाथ त्रिपाठी, एम. जे. अकबर तथा सत्य पाल सिंह मंच पर उपस्थित थे।

अपने संबोधन वक्तव्य में मुख्य अतिथि ने कहा कि इस महान हिंदी सम्मेलन में भाग लेना उनके लिए अत्यंत गर्व और प्रसन्नता की बात है तथा श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी को याद करते हुए उन्होंने कहा कि वे मॉरीशस के अच्छे और सहयोगी मित्र के रूप में सदा स्मरणीय रहेंगे। वर्ष 2000 के मॉरीशस के स्वतंत्रता दिवस के वे मुख्य अतिथि थे। श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी की अनेक मॉरीशसीय यात्राएँ हमारे प्रति उनके लगाव का परिचायक हैं। अटल जी ने भारतीय संसद में अनेकों बार हिंदी को राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा का दर्जा दिए जाने की माँग की थी। भारत की ओर से साइबर टावर के निर्माण में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। साइबर टावर को उनका नाम दिया जाना उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है। उक्त अवसर पर केरल के बाढ़ पीड़ितों के प्रति उन्होंने अपनी गहरी सहानुभूति प्रकट की। संख्या बल और हिंदी वैश्विक लोकप्रियता के आधार पर हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा बनाए जाने की माँग की। उन्होंने 11वें विश्व हिंदी सम्मेलन के 'लोगो' से प्रेरित होकर हिंदी की विशेषताओं को भारत के राष्ट्र पक्षी मोर के साथ जोड़ते हुए कहा कि हिंदी मोर के समान एक बहुत सुन्दर और पवित्र भाषा है और वह अपने पंखों को विश्व के कोने-कोने में फैला रही है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि सम्मेलन अपने सभी उद्देश्यों की पूर्ति करेगा। उनका मानना है कि मॉरीशस में हिंदी डोडो की तरह समाप्त नहीं होगी क्योंकि महात्मा गांधी संस्थान मॉरीशस में हिंदी का अध्ययन-अध्यापन निरन्तर चल रहा है। मॉरीशस ने अभिमन्यु अनत, सोमदत्त बखोरी और चिन्तामणि जैसे विश्व स्तरीय लेखक दिए हैं। उन्होंने विश्व भर से पधारे प्रतिभागियों की हज़ारों की संख्या में उपस्थिति के लिए धन्यवाद दिया तथा विश्व हिंदी सम्मान पाने वाले हिंदी सेवियों, शिक्षकों व संस्थाओं को बधाई दी। 'हिंदी हमारी पहचान है। हिंदी ही विश्व को शांति और शक्ति प्रदान करेगी। जय मॉरीशस, जय भारत, जय हिंदी' के उद्घोष के साथ उन्होंने 11वें विश्व हिंदी सम्मेलन की समाप्ति की घोषणा की।

मॉरीशस की स्वाधीनता-प्राप्ति में हिंदी की अहम भूमिका : अनिरुद्ध जगन्नाथ

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि के रूप में बोलते हुए मॉरीशस गणराज्य के मार्गदर्शक मंत्री अनिरुद्ध जगन्नाथ ने कहा कि हिंदी का यह महा कुम्भ वर्षों तक याद किया जाएगा। उन्होंने याद दिलाया कि उनके कार्यकाल में वे हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के उन्नयन के लिए लगातार प्रयासरत रहे। उन्होंने हिंदी विश्व को आश्वस्त किया कि हिंदी को अंतरराष्ट्रीय मंच पर पहचान दिलाने के लिए तथा भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार हेतु मॉरीशस की सरकार और मॉरीशस वासी अपना पूरा सहयोग देंगे। हज़ारों की संख्या में एक स्थान पर हिंदी-सेवियों की उपस्थित से वे अभिभूत हुए। सम्मेलन के मुख्य विषय की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि भाषा और संस्कृति एक दूसरे से अलग नहीं हैं। हिंदी भारतीय संस्कृति की आत्मा है। उन्होंने याद दिलाया कि जब वे प्रधान मंत्री थे तब भारत के प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने विश्व हिंदी सचिवालय मुख्यालय निर्माण का शुभारंभ विधिपूर्वक संपन्न किया था, जो हमारे पूर्वजों के प्रति एक सच्ची श्रद्धांजलि है। हमारे पूर्वज हिंदी भाषा और भारतीय संस्कृति लेकर आए थे और आज हम उनके वंशज देश की प्रगति में लगे हुए हैं। हिंदी ने देश की आज़ादी दिलाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है तथा इसने देश की आर्थिक और सामाजिक प्रगति में भी योगदान दिया है। उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि इस सम्मेलन से भारत और मॉरीशस के बीच रक्त का संबंध और ज़्यादा गहरा हो गया है। अपने संबोधन में उन्होंने 'विश्व हिंदी सम्मान' पाने वालों को हार्दिक बधाई दी तथा उम्मीद जताई कि सम्मानित लोगों से प्रेरित होकर अन्य लोग भी हिंदी के प्रचार-प्रसार में अधिक मेहनत करेंगे और लेखन पर विशेष ध्यान देंगे।

अगला विश्व हिंदी सम्मेलन फ़िजी में प्रस्तावित

रास्ता व मंज़िल दिखाने वाले थे अटल जी : एम. जे. अकबर

समापन समारोह के अवसर पर धन्यवाद ज्ञापित करते हुए भारत के विदेश राज्य मंत्री, एम. जे. अकबर ने रेखांकित करते हुए कहा कि मॉरीशस में आयोजित इस तीन दिवसीय भव्य सम्मेलन से सिद्ध हो गया कि हिंदी का भविष्य उज्ज्वल है। इस अवसर पर उन्होंने विश्व भर से पधारे प्रतिभागियों, अतिथियों एवं सम्मेलन को सफल बनाने में सहयोगी व्यक्तियों व संस्थाओं के प्रति हार्दिक आभार प्रकट किया। इस अवसर पर स्व. अटल बिहारी वाजपेयी को याद करते हुए उन्होंने कहा कि वे अब हमारे साथ नहीं है, जिन्होंने हमें रास्ता व मंज़िल दिखाई। उन्होंने सुषमा स्वराज जी के नेतृत्व की सराहना करते हुए कहा कि वे सम्मेलन को कल्पना से मूर्त रूप तक ले आईं और हर गतिविधि की स्वयं देख-रेख की। एक तरह से वे ही सम्मेलन की 'माई' हैं। उन्होंने याद दिलाई कि इतिहास खामोशी से बदलता है और इसी प्रक्रिया में आज हिंदी विश्व भाषा बन चुकी है और यह अनेक देशों में साहित्य, भाषा, संस्कृति, मनोरंजन आदि के रूप में उपस्थिति दर्ज कर चुकी है।

समापन समारोह में मंच संचालन डॉ. माधुरी रामधारी तथा प्रो. कुमुद शर्मा ने किया।

विश्व हिंदी सम्मान से हुए सम्मानित हिंदी-सेवी व संस्थाएँ

समापन समारोह में 18 मॉरीशसीय तथा 18 विदेशी हिंदी-सेवी विद्वानों को **विश्व हिंदी सम्मान** से सम्मानित किया गया। साथ ही 2 भारतीय तथा 3 विदेशी संस्थाओं को भी **विश्व हिंदी सम्मान** प्रदान किया गया। इसके अतिरिक्त श्री पावुलूरि शिवराम कृष्णय्या तथा स्व. श्री ब्रजलाल धनपत को **विशिष्ट हिंदी सम्मान** से सम्मानित किया गया। मॉरीशस के प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर सेवारत श्रेष्ठ हिंदी शिक्षक श्री शिवपूजन गौतम लालबिहारी तथा श्रीमती नारायणी हीरामन को **सर्वश्रेष्ठ हिंदी शिक्षक पुरस्कार** प्रदान किया गया। इस अवसर पर विश्व हिंदी सचिवालय के 'लोगो' के विजेता श्री वासुदेवन सी. तथा 11वें विश्व हिंदी सम्मेलन के 'लोगो' के विजेता श्री रुचित यादव को भी पुरस्कृत किया गया।

11वें विश्व हिंदी सम्मेलन ने दिया उम्मीदों को स्वर्ण पंख : विनोद कुमार मिश्र

विश्व हिंदी सम्मेलन 43 वर्ष की यात्रा समय के बड़े कालखण्ड को अपने भीतर समेटे हुए मॉरीशस की धरती पर तीसरी बार आयोजित हुआ। इस अवसर पर यह सवाल उठना भी लाज़िमी है कि जिन उद्देश्यों को लेकर इस सम्मेलन की शुरुआत हुई थी, क्या हम उसे पूरा कर पाये? जी हाँ, धीरे ही सही हम कुछ कर पाये है और शेष करने के लिए सतत प्रयासरत भी है। लोकतंत्र में राजनैतिक नेतृत्व के सकारात्मक रुख की बदौलत हम बहुत कुछ कर पाते हैं। सौभाग्य से भारत और मॉरीशस दोनों देशों के राजनैतिक नेतृत्व का रुख हिंदी को लेकर सकारात्मक है। अन्यथा व्यवस्था के लौह आवरण को तोड़कर लक्ष्य तक पहुँचना कष्ट साध्य हो जाता। सम्मेलन के उद्घाटन भाषण में सुषमा स्वराज की घोषणा हमारी उस उम्मीद को वृहत् आकार देती है जिससे संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा बनने की दिशा में हम कुछ कदम और उठा सकते हैं। राष्ट्र संघ के साप्ताहिक हिंदी समाचार तथा हिंदी में ट्वीट हमारी उम्मीदों को स्वर्ण पंख लगा देते हैं।

प्रकाशक : विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस
संपादक : प्रो. विनोद कुमार मिश्र
संपादन-सहयोग : महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
पता : इंडिपेंडेंस स्ट्रीट, फ़ेनिक्स 73423, मॉरीशस
फ़ोन : +230 660 0800
फ़ैक्स : +230 606 4855
ईमेल : info@vishwahindi.com
वेबसाइट : www.vishwahindi.com
डेटाबेस : www.vishwahindidb.com
मुद्रक : काते प्रिंटिंग लि., मॉरीशस

प्रस्तावित अनुशंसाएँ

दिनांक : 18.08.2018

समानांतर सत्र - 1
विषय : भाषा एवं लोक-संस्कृति का अंत:संबध
अनुशंसाएँ :

1. सांस्कृतिक अवध ग्राम की स्थापना की जाए क्योंकि रामचरितमानस यहाँ का प्राण है।
2. भारत और प्रवासी क्षेत्रों को सम्मिलित कर लोककथाओं तथा लोकगीतों का प्रकाशन किया जाए।
3. विद्यालयों, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों में लोक जीवन तथा लोक संस्कृति का समावेश किया जाए।
4. लोक जीवन, लोक साहित्य पर शोध परियोजनाओं में वरीयता एवं उन्हें प्रोत्साहन दिया जाए।
5. लोक भाषा के लिए कार्यरत संस्थाओं द्वारा लोक साहित्य एवं लोक संगीत, लोक जीवन के संवर्धन हेतु राष्ट्रीय स्तर पर कार्य योजनाएँ बनाई जाएँ।

समानांतर सत्र - 2
विषय : प्रौद्योगिकी के माध्यम से हिंदी सहित भारतीय भाषाओं का विकास
अनुशंसाएँ :

1. हिंदी शिक्षा को समाज के प्रत्येक स्तर पर लागू किया जाए।
2. यूनिकोड स्क्रिप्ट सर्चेबल किया जाए।
3. बैंकिंग सेक्टर में यूनिकोड का प्रचार-प्रसार किया जाए।
4. बीमा, अंग्रेज़ी में प्राप्त आई. टी. सॉल्यूशन को हिंदी में किया जाए।
5. सभी निजी एवं सरकारी ऑनलाइन सेवाएँ हिंदी में उपलब्ध की जाएँ।
6. भारतीय भाषाओं के प्रचार-प्रसार हेतु सभी वेबसाइट्स द्विभाषी (अंग्रेज़ी और हिंदी) स्वरूप में किए जाएँ।
7. यूनिकोड का मानकीकरण किया जाए।

समानांतर सत्र - 3
विषय : हिंदी शिक्षण में भारतीय संस्कृति
अनुशंसाएँ :

1. हिंदी के विदेशी विद्यार्थियों को आरंभ में भारतीय संस्कृति का व्यावहारिक ज्ञान दिया जाना चाहिए।
2. भाषा शिक्षण में गीत, नाटक और फ़िल्मों का उपयोग किया जाए।
3. अध्यापकों के लिए भाषा शिक्षण के प्रशिक्षण की समुचित व्यवस्था की जानी चाहिए।
4. बच्चों की कविताओं के माध्यम से भी संस्कृति का ज्ञान कराना चाहिए।

समानांतर सत्र - 4
विषय : हिंदी साहित्य में संस्कृति चिंतन
अनुशंसाएँ :

1. साहित्य और संस्कृति के संबंध को मज़बूत बनाया जाए।
2. नयी पीढ़ी को सांस्कृतिक दृष्टि से जागरूक बनाया जाए।
3. भारतीय संस्कृति पर हो रहे विपरीत प्रभावों पर रोक लगाने का उपक्रम किया जाए।
4. प्रौद्योगिकी का उपयोग कर संस्कृति की वैज्ञानिक व्याख्या को प्रोत्साहन दिया जाए।

दिनांक : 19 अगस्त 2018

समानांतर सत्र - 5
विषय : फ़िल्मों के माध्यम से भारतीय संस्कृति का संरक्षण
अनुशंसाएँ:

1. फ़िल्मों के माध्यम से संस्कृति के संरक्षण के लिए चर्चा-परिचर्चा का आयोजन किया जाना चाहिए।
2. ग्रामीण पृष्ठभूमि से आए फ़िल्मकारों को फ़िल्म-निर्माण में मदद दी जानी चाहिए।
3. सिनेमा में प्रतिपादित सामाजिक सोच का दिशा-निर्धारण किए जाने के प्रयास किए जाने चाहिए।
4. वेब सीरीज़ में आ रही विषयवस्तु पर नियंत्रण रखे जाने की ज़रूरत है।
5. कलात्मक फ़िल्मों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।
6. हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए देवनागरी लिपि ही स्वीकार की जाए।

सत्र - 6
विषय : संचार माध्यम और भारतीय संस्कृति
अनुशंसाएँ :

1. नव माध्यम को 'सोशल मीडिया' के स्थान पर नया हिंदी नाम दिया जाए।
2. भारतीय जनमाध्यमों को विदेशों, विशेष रूप से प्रवासी भारतीय बहुल क्षेत्रों के जनमाध्यमों से प्रसारण सामग्री की प्राप्ति तथा आदान-प्रदान हेतु कार्य योजना तैयार की जाए।
3. भारत में किसी उपयुक्त स्थान पर भारतरत्न 'अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी पत्रकारिता केंद्रीय विश्वविद्यालय' की स्थापना की जाए। श्री वाजपेयी द्वारा समय-समय पर पत्रकारिता और पत्रकारों के विषय में व्यक्त विचारों तथा उनके संपादकीय अग्रलेखों का संकलन किया जाए तथा प्रकाशित किया जाए।
4. भारतीय तथा विदेशी पत्रकारों-संपादकों के लिए भारतीय संस्कृति के परिचय एवं लेखन प्रशिक्षण के सावधिक पाठ्यक्रम प्रारंभ किया जाए।
5. मीडिया तथा जनसंचार शिक्षण में 'भारतीय संस्कृति' विषय को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाए।
6. भारत के संचार माध्यमों (यथा - समाचार पत्र-पत्रिकाओं, रेडियो, टेलीविजन तथा फ़िल्मों) में इंडिया के स्थान पर 'भारत' के प्रयोग को प्रोत्साहित किया जाए।
7. पत्रकारिता एवं संपादन के क्षेत्र में भारत के शीर्ष जननेताओं एवं राजनेताओं के अवदान पर शोध कार्य किया जाए।
8. महाविद्यालय तथा विश्वविद्यालय स्तर की पत्रकारिता एवं जनसंचार सहित अन्य विषयों के अध्यापकों के लिए सूचना प्रौद्योगिकी में हिंदी के बढ़ते प्रयोग और उपयोग की दृष्टि से प्रशिक्षण तथा अभिमुखीकरण कार्यक्रम चलाये जाएँ।
9. क्षेत्रीय स्तर पर संस्कृति तथा मूल्यपरक ज्ञान संवर्धन एवं उनके विषय में जागरूकता के लिए सामुदायिक रेडियो के संजाल का विस्तार किया जाए। इस हेतु सामुदायिक रेडियो स्टेशनों की स्थापना प्रक्रिया को सरल बनाया जाए।
10. 'व्हाट्स एप' जैसे नवाचारी डिजिटल प्लेटफ़ार्मों का सांस्कृतिक पत्रिका के रूप में उपयोग किया जाए।
11. भारतीय संस्कृति के विविध पक्षों पर आधृत प्रकाशन एवं प्रसारण-मीडिया अंतर्वस्तु लेख-समाचार, फ़ीचर आदि तैयार कर विभिन्न देशों के मीडिया संस्थानों को उपलब्ध कराने के प्रयास किए जाएँ।

समानांतर सत्र - 7
विषय: प्रवासी संसार : भाषा और संस्कृति
अनुशंसाएँ :

1. डायस्पोरा देशों में भारतीय भाषाओं एवं संस्कृति के संरक्षण और संवर्धन हेतु प्राथमिकता के साथ प्रयास किये जाएँ।
2. प्रवासी भारतीयों के बीच युवा पीढ़ी की ज़रूरतों के अनुरूप हिंदी के प्रचार-प्रसार की योजना बनायी जाए तथा उसे क्रियान्वित किया जाए।
3. हिंदी शिक्षण-प्रशिक्षण में प्रवासी दृष्टिकोण को अपनाया जाए। भारतवंशी छात्रों के लिए उपयुक्त पाठ्यक्रम विकसित किया जाए।
4. 'क्रियोल' में सृजित हो रहे साहित्य को हिंदी में अनुवादित किया जाए।
5. भारतीय संस्कृति एवं भाषा को युवा पीढ़ी तक पहुँचाने के लिए गैर-सरकारी परंतु प्रामाणिक प्रयासों को वित्तीय सहायता दी जाए।
6. भारत को कर्मभूमि बनाने के लिए प्रवासी भारतीय युवा पीढ़ी को प्रेरित तथा प्रोत्साहित किया जाए।
7. प्रवासी रचनाओं का फ़्रांसीसी, डच, अंग्रेज़ी एवं अन्य भाषाओं में अनुवाद किया जाए।
8. दक्षिण पूर्व एशिया के विभिन्न देशों में हिंदी शिक्षण में संलग्न लोगों को विशिष्ट प्रशिक्षण उपलब्ध कराया जाए।
9. हिंदी शिक्षण-प्रशिक्षण हेतु ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म तैयार किया जाए।
10. विश्व हिंदी सचिवालय की उपशाखाएँ प्रशांत, कैरेबियाई एवं यूरोपीय देशों में खोली जाएँ।
11. फ़िजी में हिंदी को राजभाषा का गौरव प्राप्त है। अतः अगला विश्व हिंदी सम्मेलन फ़िजी में आयोजित किया जाए।
12. गोस्वामी तुलसीदास के नाम पर एक 'सांस्कृतिक ग्राम' स्थापित किया जाए।

समानांतर सत्र - 8
विषय : हिंदी बाल साहित्य और संस्कृति
अनुशंसाएँ :

1. मॉरीशस के बाल साहित्य के प्रकाशन की व्यवस्था की जाए।
2. साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं में बाल साहित्य का एक कॉलम अनिवार्यत: रखा जाना चाहिए।
3. प्रति वर्ष, बाल साहित्य पर राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी की जाए।
4. बाल साहित्य का वार्षिक आकलन किया जाए।
5. हिंदी बाल साहित्य का तथ्यात्मक इतिहास लिखा जाए।
6. बाल साहित्य अकादमी स्थापित की जाए।
7. गर्भवती महिलाओं में अच्छे संस्कार डालने के लिए बाल साहित्य विषयक पुस्तकें एवं कार्यशाला होनी चाहिए।
8. बाल साहित्य में 'युगधर्म' और 'राष्ट्रधर्म' पर विशेष बल दिया जाना चाहिए।
9. प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के लिए बाल साहित्य विषयक उन्मुखीकरण (ओरिएन्टेशन) एवं पुनश्चर्या कार्यक्रम (रिफ्रेशर) आयोजित किया जाए।
10. विभिन्न देशों में शिक्षकों का आदान-प्रदान किया जाए।

संपादकीय

21वीं सदी 'सूचना एवं प्रौद्योगिकी से संचालित ज्ञान की सदी' है। ऐसे में हिंदी को ज्ञान की संवाहिका बन उसका मार्ग प्रशस्त करना पड़ेगा। साथ ही साथ भाषा एवं साहित्य के बीच संतुलन बनाते हुए हिंदी की भारतीय एवं भारतेतर संपदा को उन्मुक्त गगन में विचरण करने का समान अवसर भी प्रदान करना होगा। इसे एक ओर वैश्विक प्रतिस्पर्धा में बने रहने के लिए सूचना-साधनों से संपन्न बनना होगा तथा दूसरी ओर हिंदी के वैश्विक जनमानस की वैचारिकी में भी बदलाव लाना अपरिहार्य होगा, तभी वह अपनी अधिग्राही लोकव्याप्ति के लिए समादृत होगी। हिंदी सही अर्थों में तभी लोकतांत्रिक तथा बहुआयामी विश्व व्यवस्था के सर्वथा अनुकूल बन पाएगी और प्रवासी भारतीय उसमें अपनी अस्मिता का अक्स देख पाएँगे।

इतिहास इस बात का साक्षी रहा है कि 'ज्ञान' पर जिसका भी अधिकार रहा है उसी ने इसे हथियार बनाकर विश्व व्यवस्था पर कब्ज़ा जमाया। ऐसी स्थिति में हिंदी को प्रतिरोध की भाषा बनाने का भी एक विकल्प मौजूद है जिसके सहारे विश्व भाषा समुदाय के बीच दावेदारी पेश करते हुए इसे वैकल्पिक ज्ञान की भाषा के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है।

आज हिंदी संसार की समृद्ध भाषाओं में गिनी जा रही है। चाहे बात विचार, संचार, व्यवहार या विस्तार की हो, हिंदी की स्थिति और उपस्थिति काबिल-ए-तारीफ़ है। हर दृष्टि से सक्षम तथा लगातार आगे बढ़ते रहने के जज़्बे से लबरेज़ यह दुनिया की दो महत्वपूर्ण भाषाओं – मंदारिन तथा अंग्रेज़ी के साथ खड़ी दिख रही है। आज 'विश्वग्राम' की अवधारणा के सामने 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का प्राचीनतम् चिंतन भी उपस्थित है जिसमें संसार भर के लोगों के बीच निहित तात्विक एकता की बात की गई है तथा जिसकी आधारशिला आध्यात्मिकता पर अवलंबित है। दूसरी ओर 'विश्वग्राम' की अवधारणा बंधनमुक्त व्यापार और व्यावसायिक समस्या तथा प्रतिस्पर्धा की बात करती है। एक आध्यात्मिक है तो दूसरा भौतिक। किन्तु भौतिकता के सहारे सिर्फ़ बाज़ार बनकर रहा जा सकता है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी में दक्षता हासिल करने के लिए भाषा विशेष की कोई ज़रूरत नहीं होती है। भौतिक चिंतन एवं अनुसंधान के लिए 'निजभाषा' ही एक मात्र विकल्प है। 'निजभाषा' के अतिरिक्त दूसरी 'बाहरी' भाषा खण्डित संस्कृति लेकर हमारे बीच आती है और हमारे चिंतन की धारा को प्रभावित करती है तथा ज्ञान और जीवन के बीच एक बड़ी विभाजक रेखा खींचने का उपक्रम भी करती है। 'वसुधैव कुटुम्बकम' के शाश्वत मूल्यों के अनुप्रयोग के द्वारा ही दोनों अवधारणाओं के बीच चिर स्थायी संतुलन कायम किया जा सकता है।

हिंदी में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी से संबंधित संप्रेषणीयता अपनी पूरी जीवंतता के साथ मौजूद है। वर्तमान में हो रहे अधुनातन आविष्कार स्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा तक आसानी से पहुँच रहे हैं। किन्तु उसे स्वीकार करने में कहीं न कहीं हमारा भाषाई हीनताबोध आड़े आ जाता है। सत्ता के शीर्ष पर सदियों से आसीन तथाकथित 'विश्व भाषा' हमारी अस्मिता पर हावी हो जाती है। जब फ्रांस ,जर्मनी, चीन, रूस ,जापान, नॉर्वे तथा इज़राइल जैसे अनगिनत देश, जिनके जनमानस पर उक्त 'विश्व भाषा' का कब्ज़ा नहीं है, अपनी भाषा के बलबूते ज्ञान-विज्ञान और प्रौद्योगिकी में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर रहे हैं तब उदात्त सांस्कृतिक एवं भाषाई विरासत वाले हम क्यों नहीं कर पा रहे? फिर भी जब तक विज्ञान और तकनीकी विशेषज्ञ हिंदी को अपनी लेखन की भाषा नहीं बनाते तब तक हिंदी जगत भाव और शैली की दृष्टि से सर्वोत्कृष्ट साहित्य से वंचित रहेगा। किसी भी भाषा की चिंतन परम्परा को आगे बढ़ाने में मौलिक वैचारिकी तथा शोध की महती भूमिका होती है तथा इन कार्यों के लिए नए शब्द एवं नई अभिव्यक्तियों की निर्मिति भी होती है। इस प्रकार ज्ञान और भाषिक संपदा साथ-साथ विकसित होते हैं। ज्ञान-विज्ञान की अभिव्यंजना शक्ति को धारदार बनाने में हिंदी अपनी चेतना, प्रतिबद्धता एवं स्वाभिमान के साथ अपनी क्षमता सिद्ध कर सकती है क्योंकि अनुसंधान एवं सृजन हृदय की भाषा में ही संभव है। रटकर प्राप्त ज्ञान से परीक्षा में सर्वोत्तम अंक तो प्राप्त हो सकता है किन्तु चिंतन में स्वावलंबी हुए बिना न तो वह आविष्कार किया जा सकता है और न ही वैचारिक सोच पैदा हो सकती है। तथाकथित विश्वभाषा आज तक एक भी क्रांतिकारी ग्रंथ देने में सक्षम नहीं रही है। गीता, कुरान, बाइबिल, दासकैपिटल, रामायण, महाभारत आदि महान एवं क्रांतिकारी ग्रंथ भी अन्य भाषाओं की देन है।

वर्तमान सदी पिछली कई सदियों की तुलना में प्रौद्योगिक उपलब्धियों के संदर्भ में ज़्यादा गतिशील रही है। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की मदद से हर प्रकार की दूरियाँ खत्म हुई हैं। वैश्विक सीमाएँ संकुचित हुई हैं। पिछली कम से कम तीन शताब्दियाँ पश्चिम के वर्चस्व की साक्षी रही हैं लेकिन इक्कीसवीं सदी भारत के नाम से जानी जाएगी। भारत की अर्थव्यवस्था तीव्रगामी है। विश्व बाज़ार में आनेवाले दिनों में इन सभी की भूमिका महत्वपूर्ण रहने वाली है। इसमें कोई संदेह की गुंजाइश नहीं है कि हिंदी वैश्विक भाषाई विकल्प के रूप में उभरेगी।

सदियाँ गुज़र जाती हैं तब कहीं गढ़ों एवं मठों को तोड़ने के प्रबल संकल्प के साथ इतिहास की धारा को जन-सरोकारों के अनुरूप मोड़ने का अवसर आता है।

हिंदी की 'शुचिता' और 'शुद्धता' को लेकर उसके आग्रही लोगों की चिन्ता को कितना जायज़ ठहराया जा सकता है ? यह भी एक विचारणीय बिन्दु है। क्या मिलावट से भाषा के अस्तित्व पर संकट आ सकता है? क्या भाषा अपना रंग-रूप खो रही है या भाषा प्राचीनता का निर्मोक उतार कर नवीनता की ओर अग्रसर हो रही है? क्या वह त्याग और ग्रहण के फलसफ़े का अनुपालन करते हुए हो रहे परिवर्तनों पर स्वीकार्यता की मुहर लगा रही है? क्या मीडिया द्वारा परोसी जा रही भाषा को मानकीकृत करने की पहल तार्किक एवं जायज़ है?

वैचारिक दरिद्रता का अनर्गल आरोप तथा मानसिक गुलामी का भूत हमारे सर पर सवार कर दिया गया है। हिंदी की सामर्थ्य को कमतर कर मूल्यांकित करना भी एक तरह की मनमानी है। भाषाई अराजकता के पसरने का भी खतरा बना हुआ है। भाषा के संस्कार से नई पीढ़ी वंचित न रह जाए।भाषा के साथ इस तरह का व्यवहार अनुचित है और उसकी ताकत को कमतर आँककर भ्रम पैदा करने की कोशिश भी। पर वास्तविकता इससे इतर है। हिंदी की वैचारिकी एवं समृद्ध शब्द-संपदा ज्ञान-विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी सहित अन्य विधाओं को मुखरता प्रदान करने में सर्वथा सक्षम है। यदि भविष्य में किन्हीं दो-तीन भाषाओं में विश्व को संबोधित करने की स्थिति आती है तो निश्चित रूप से उनमें से एक हिंदी अवश्य होगी। यही हिंदी की ताकत है और यह संभव हो सका है उसकी उपयोगिता एवं बाज़ारप्रियता के चलते। हिंदी अपनी वैचारिकी की महायात्रा के कई पड़ावों को संस्पर्श करते हुए कई धाराओं को अपने भीतर समेटे हुए सतत प्रवाहमान है। आज के बदले हुए परिवेश में इसने अपने परम्परागत आवरणों से बाहर निकल कर एक वैश्विक पहचान बनायी है। उसकी झोली में जो भी गिरा, निखरकर बाहर आया। पिछले दो-तीन दशकों में इस भाषा ने विकास के कई नये आयाम एवं कीर्तिमान स्थापित किये हैं। वैश्विक संवाद की मशाल ले हिंदी अग्रिम पंक्ति में खड़ी भावनात्मकता से व्यावसायिकता की ओर एवं धार्मिकता से कार्मिकता की ओर अग्रसर है।

प्रो. विनोद कुमार मिश्र
महासचिव

विश्व हिंदी सचिवालय के ग्रंथालय एवं प्रलेखन केंद्र की नाम पट्टिका का अनावरण
तथा प्रवासी भारतीय नागरिक कार्ड वितरण

सोमवार 20 अगस्त 2018 को भारतीय विदेश मंत्री, श्रीमती सुषमा स्वराज ने फ़ेनिक्स स्थित विश्व हिंदी सचिवालय में दो महत्वपूर्ण गतिविधियों में भाग लिया। सबसे पहले उन्होंने सचिवालय के ग्रंथालय एवं प्रलेखन केंद्र का नामकरण श्री बालेश्वर अग्रवाल के नाम पर किया। इस अवसर पर उन्होंने सचिवालय के ग्रंथालय की नाम पट्टिका का औपचारिक अनावरण किया। ध्यातव्य है कि श्री बालेश्वर अग्रवाल प्रवासी देशों में दशकों तक ममत्व भाव से काम करते रहे। इस अवसर पर मॉरीशस गणराज्य के मार्गदर्शक मंत्री, रक्षा मंत्री और रोड्रिग्स मंत्री, सर अनिरुद्ध जगन्नाथ, लेडी सरोजिनी जगन्नाथ, शिक्षा व मानव संसाधन, तृतीयक शिक्षा एवं वैज्ञानिक अनुसंधान मंत्री श्रीमती लीला देवी दूकन-लछूमन, मॉरीशस में भारतीय उच्चायुक्त, श्री अभय ठाकुर और अन्य महानुभव उपस्थित थे।

अनावरण के पश्चात सुषमा स्वराज ने एक दूसरे समारोह के दौरान कुछ मॉरीशस वासियों को प्रवासी भारतीय नागरिक कार्ड प्रदान किए, जिनमें गणराज्य के मार्गदर्शक मंत्री, रक्षा मंत्री और रोड्रिग्स मंत्री, सर अनिरुद्ध जगन्नाथ, लेडी सरोजिनी जगन्नाथ, शिक्षा व मानव संसाधन, तृतीयक शिक्षा एवं वैज्ञानिक अनुसंधान मंत्री माननीया श्रीमती लीला देवी दूकन-लछूमन एवं चुनाव आयुक्त इरफ़ान रमन आदि प्रमुख रहे। यह कार्ड मॉरीशस वासियों के लिए विशेष महत्व रखता है। भारतीय विदेश मंत्री ने स्वयं उल्लेख किया कि इस कार्ड को प्राप्त करने के लिए मॉरीशस वासियों के लिए पीढ़ी की कोई सीमा निर्धारित नहीं है।

विदेशी विद्वानों का हिंदी प्रेम

मार्को ज़ोली, प्रतिभागी - इटली

हिंदी की पढ़ाई विश्वविद्यालय में होती है। इटली में कुल मिलाकर 5-6 विश्वविद्यालय होंगे जिनमें हिंदी पढ़ाई जाती है। वहाँ ज़्यादातर व्याकरण पर ज़ोर दिया जाता है। हिंदी में किसी सुधार की आवश्यक्ता नहीं। हिंदी तो बहुत सुंदर भाषा है। मैं हिंदी से बहुत प्यार करता हूँ। हिंदी के विद्यार्थी जब भारत जाते हैं तो उन्हें हिंदी में बात करने का अभ्यास होता है।

प्रो. उल्फ़त मुहीब, प्रतिभागी - उज़्बेकिस्तान

70 साल से उज़्बेकिस्तान में हिंदी पढ़ाई जाती है। विशेष रूप से लालबहादुर शास्त्री नामक पाठशाला में हिंदी-अध्यापन होता है, भारतीय सांस्कृतिक केन्द्र में हिंदी पढ़ाई जाती है, प्राच्य विद्या इंस्टीट्यूट में हिंदी की पढ़ाई बी.ए., एम.ए. और पी.एच.डी. तक होती है। बहुत सारी किताबें लिखी जा चुकी हैं और अनुवाद भी हुए हैं। भारतीय दर्शन और इतिहास भी पढ़ाया जाता है।

प्रो. ज्यांग जिंगकुई, प्रतिभागी - चीन

हिंदी मेरे लिए मेरा खाना है। मैं हिंदी का प्रेमी हूँ। हिंदी बहुत सुंदर भाषा है।

डॉ. आना चेलानोकोवा - रूस

रूस में बहुत लोगों को हिंदी पसंद है। हिंदी में उनकी रुचि कई स्तरों पर है। वे मनोरंजन के रूप में हिंदी फ़िल्मी गानों पर नाचते - गाते और फ़िल्म देखते हैं। रूस में तीन विश्वविद्यालय हैं जहाँ हिंदी का अध्ययन और अध्यापन होता है।

श्री जावेद खोलोव - ताज़ाकिस्तान

हिंदी भाषा को ताज़ाकिस्तान में 1981 से पढ़ा रहे हैं। हमारे राष्ट्रीय विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग है। ताज़ाकिस्तान में अनेक हिंदी अध्ययन केंद्र हैं जहाँ लोग हिंदी पढ़ते हैं।

विश्व हिंदी सचिवालय में सी-डैक की प्रदर्शनी

भारत सरकार के इलेक्ट्रॉनिकी एवं सूचना मंत्रालय की स्वायत्त वैज्ञानिक संस्था, सी-डैक, पूणे द्वारा दिनांक 21 से 24 अगस्त 2018 तक विदेश मंत्रालय, भारत तथा विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस के सहयोग से एक प्रदर्शनी लगाई जा रही है। इसमें मुख्य रूप से हिंदी भाषा के लिए सी-डैक द्वारा विकसित विभिन्न प्रौद्योगिकी उत्पादों के बारे में लोगों को जानकारी दी जाएगी। इसकी सूचना प्रो. विनोद कुमार मिश्र, महासचिव, विश्व हिंदी सचिवालय ने दी। प्रदर्शनी श्री शशि पाल सिंह, प्रधान तकनीकी अधिकारी, सी-डैक की देख-रेख में होगी। प्रदर्शनी का मुख्य उद्देश्य मॉरीशस प्रौद्योगिकी के माध्यम से हिंदी को बढ़ावा देना और हिंदी भाषा के क्षेत्र में हो रहे प्रौद्योगिकी कार्यों की जानकारी विद्यार्थी, शिक्षक एवं हिंदी प्रेमी जनता तक पहुँचाना है। इसमें मुख्यत: यूनिकोड टाईपिंग टूल, हिंदी फ़ॉन्ट्स, स्थानीयकरण, प्रकल्प प्रबंध व्यवस्था, हिंदी सर्च इंजन, एम्बेडेड सिस्टम, हिंदी सीखने का सॉफ़्टवेयर, हिंदी स्पीच सॉफ़्टवेयर, अनुवाद सॉफ़्टवेयर तथा शब्दकोश आदि सॉफ़्टवेयर प्रदर्शित किए जाएँगे।

सम्मेलन की अन्य गतिविधियाँ

11वें विश्व हिंदी सम्मेलन के अंतर्गत अन्य विशेष गतिविधियों का आयोजन भी किया गया। प्रदर्शनी-स्थल पर देश-विदेश के लेखकों द्वारा लगभग 50 पुस्तकों का लोकार्पण किया गया।

महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस के छात्रों द्वारा नुक्कड़ नाटक व अन्य पॉकेट शो की प्रस्तुतियाँ भी हुईं।

करते हृदय से वरण
हिंदी भाषा माँ हमारी, हृदय में इसका वास है
सुसंस्कृत समृद्धि का भण्डार ये महान है
ले प्रण अभी आज इसी पल, इसे गर्व से अपनाएँ
विश्वाम्बर में फैलाएँ, विश्व मंच से गाएँ
माँ हिंदी माँ हिंदी माँ हिंदी हमारे प्राण
गौरव का प्रतीक
आओ! आओ सब मिल करें प्रणाम
भारतवर्ष का गौरव हो माँ
चरणों में प्रणाम, माँ चरणों में प्रणाम
सकल विश्व का गौरव हो माँ
चरणों में प्रणाम, माँ चरणों में प्रणाम

Diplomatic Relations between Mauritius and India
विश्व हिंदी सम्मेलन
Mauritius
Official First Day Cover

विश्व हिन्दी सम्मेलन
मॉरिशस, 18-20 अगस्त, 2018

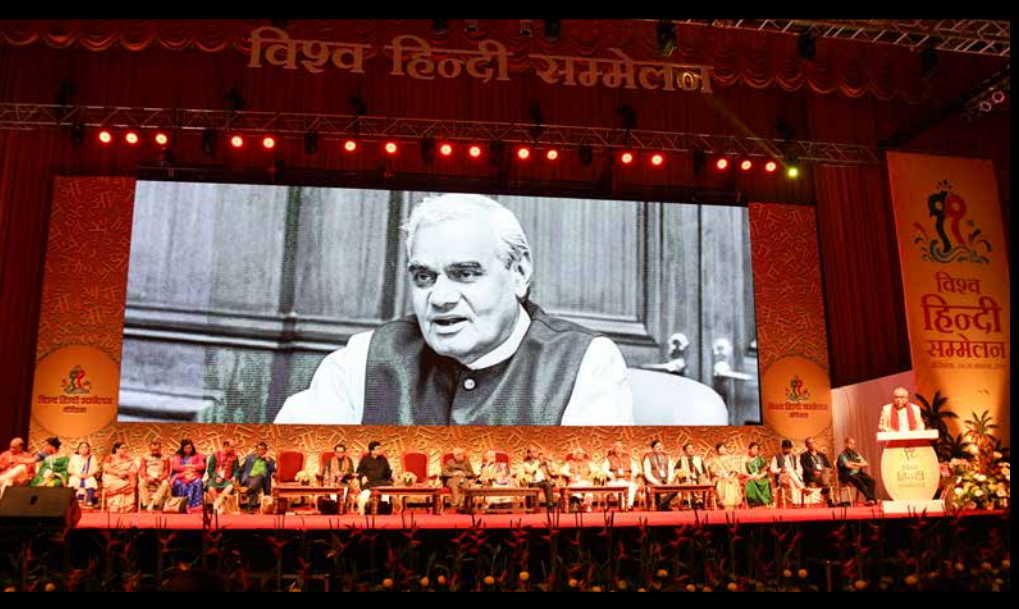

विश्व हिन्दी सम्मेलन

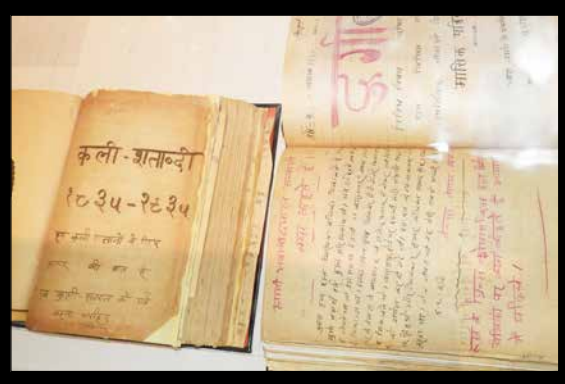

विश्व हिन्दी सम्मेलन

विश्व हिन्दी सम्मेलन

गगनांचल

विश्व हिन्दी सम्मेलन
मॉरीशस
स्वागतम्

कुली-शताब्दी
1835-1935

पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली
राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर
डायमंड बुक्स

प्रिया

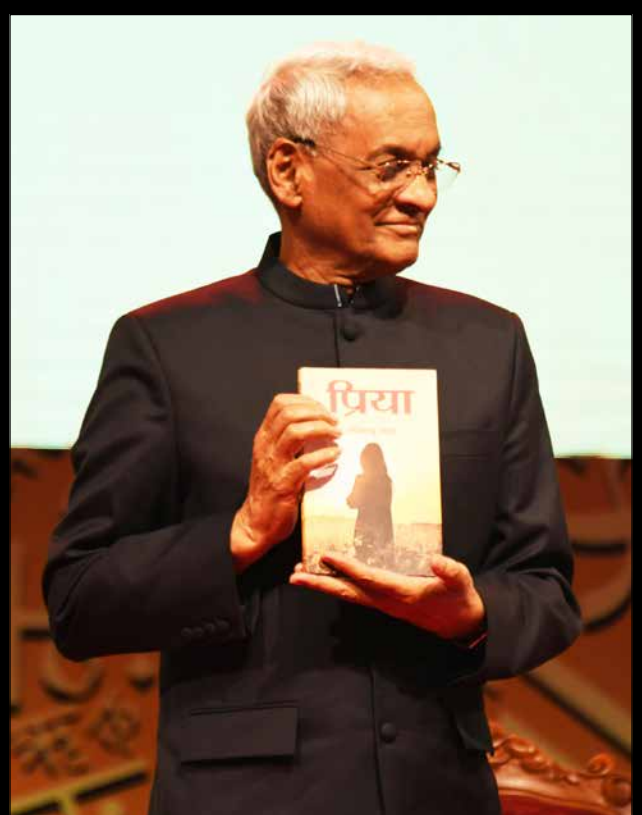

विश्व हिंदी साहित्य
2018

विश्व हिन्दी सम्मेलन
मॉरीशस
स्वागतम्

विश्व हिन्दी सम्मेलन
मॉरीशस, 18-20 अ 8

प्रवासी संसार

विश्व हिन्दी

'विश्व हिंदी सम्मान' से नवाज़े गए विश्व के हिंदी-सेवी

भारत

डॉ. जोरम आनिया ताना

डॉक्टर जोरम आनिया ताना, विद्यावाचस्पति, अरुणाचल प्रदेश में सहायक प्राध्यापक के रूप में कार्यरत हैं। निशी लोकगीत-सांस्कृतिक अध्ययन एवं हिंदी निशी डिक्शनरी नामक आपकी दो पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। आपके कई शोध पत्र, लेख व अनुवाद भी प्रकाशित हुए हैं। आपको बिनोवा नागरी राष्ट्रीय सम्मान, साहित्य सेवा सम्मान से सम्मानित किया जा चुका है।

हिंदी की सेवा में आपके उत्कृष्ट कार्यों के लिए विश्व हिंदी सम्मान से सम्मानित किया गया।

श्री प्रसून जोशी

श्री प्रसून जोशी प्रसिद्ध कवि, गीतकार पटकथा लेखक हैं। भारत सरकार से पद्मश्री से सम्मानित किए जाने के अतिरिक्त आपको दो बार राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार से भी पुरस्कृत किया जा चुका है। आपको वर्ल्ड इकोनॉमिक फ़ोरम द्वारा यंग ग्लोबल लीडर भी चुना जा चुका है।

हिंदी की सेवा में आपके उत्कृष्ट कार्यों के लिए विश्व हिंदी सम्मान से सम्मानित किया गया।

प्रो. सुरेश ऋतुपर्ण

प्रो. सुरेश ऋतुपर्ण प्रतिभासंपन्न विद्वान हैं। दिल्ली विश्वविद्यालय से विद्यावाचस्पति की उपाधि प्राप्त करने के अतिरिक्त आपने 1971 से 2002 तक हिन्दू कॉलेज में अध्यापन तथा भारतीय उच्चायोग में राजनयिक के रूप में भी अविस्मरणीय सेवाएँ दीं। आप 'विश्व हिंदी न्यास, न्यूयार्क के अंतरराष्ट्रीय समन्वयक' और 'हिंदी जगत' नामक त्रैमासिक पत्रिका के संपादक रहे हैं। आपको त्रिनिदाद हिंदी भूषण सम्मान, हिंदी निधि सम्मान, हिंदी प्रसार सम्मान व साहित्य शिरोमणि सम्मान से भी सम्मानित किया जा चुका है।

हिंदी की सेवा में आपके उत्कृष्ट कार्यों के लिए विश्व हिंदी सम्मान से सम्मानित किया गया।

प्रो. इंद्रनाथ चौधरी

दिल्ली विश्वविद्यालय में प्राध्यापक प्रोफ़ेसर तथा बुखारेस्ट विश्वविद्यालय में अतिथि हिंदी प्रोफ़ेसर के रूप में सेवाएँ देने के अतिरिक्त प्रोफ़ेसर इंद्रनाथ चौधरी 13 वर्षों तक साहित्य अकादमी के सांस्कृतिक प्रशासक रहे हैं। आप भारतीय उच्चायोग, लंदन में निदेशक तथा इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली में शैक्षणिक निदेशक रहे हैं। आप टैगोर साहित्य, काव्य-शास्त्र, सौंदर्य-शास्त्र, नाटक, धर्म, संस्कृति तथा भारत अध्ययन के विशेषज्ञ हैं।

हिंदी की सेवा में आपके उत्कृष्ट कार्यों के लिए आपको विश्व हिंदी सम्मान से सम्मनित किया गया।

डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी

कलकत्ता विश्विद्यालय से विद्यावाचस्पति की उपाधि प्राप्त करने वाले डॉक्टर प्रेमशंकर त्रिपाठी हिंदी अध्यापन तथा लेखन से जुड़े रहे हैं। आप सुरेंद्र नाथ सांध्य कॉलेज कलकत्ता के हिंदी विभाग में 33 वर्षों तक एसोसिएट प्रोफ़ेसर एवं विभागाध्यक्ष रहे। आपने कई बहुचर्चित पुस्तकों, यथा अमर आग है, गीता परिक्रमा, मानस अनुक्रमणिका आदि का संपादन किया है। संपादन कार्य के अतिरिक्त आप साहित्य भूषण सम्मान, विष्णुकांत शास्त्री हिंदी सेवा सम्मान जैसे पुरस्कारों के विजेता भी रह चुके हैं।

हिंदी की सेवा में आपके उत्कृष्ट कार्यों के लिए आपको विश्व हिंदी सम्मान से सम्मानित किया गया।

डॉ. श्रीमती ऋता शुक्ल

राँची विश्वविद्यालय के हिंदी विभागाध्यक्ष, मानविकी में संकायाध्यक्ष तथा पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के निदेशक के रूप में अपनी सेवाएँ देने वाली डॉ श्रीमती ऋता शुक्ल ने मगध विश्वविद्यालय से विद्यावाचस्पति की उपाधि प्राप्त की है। 'धर्मयुग', 'हिंदुस्तान', 'हंस', 'सारिका', 'नई धारा' जैसी कई प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में आपकी रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं। आपको लोकभूषण सम्मान, हिन्दुस्तानी प्रचार सेवा सम्मान, राजभाषा सम्मान, नई धारा रचना सम्मान जैसे पुरस्कारों से भी सम्मानित किया गया है।

हिंदी की सेवा में आपके उत्कृष्ट कार्यों के लिए आपको विश्व हिंदी सम्मान से सम्मानित किया गया।

प्रो. चमन लाल गुप्त

पंजाब विश्वविद्यालय से वाचस्पति की उपाधि अर्जित करने वाले प्रो. चमन लाल गुप्त शोध निर्देशन और लेखन से जुड़े रहे हैं। आपको राष्ट्रीय हिंदी सेवा सम्मान, हिंदी गौरव सम्मान, साहित्य शिरोमणि सम्मान, राष्ट्रीय एकात्मकता पुरस्कार आदि सम्मानों से सम्मानित किया गया है।

हिंदी की सेवा में आपके उत्कृष्ट कार्यों के लिए आपको विश्व हिंदी सम्मान से सम्मानित किया गया।

श्री श्रीधर पराडकर

समाज के प्रति पूर्णतया समर्पित समाजसेवी श्री श्रीधर पराडकर अनेक प्रसिद्ध पुस्तकों के प्रणेता रहे हैं। लेखन के अतिरिक्त आप अनुवाद तथा संपादन कार्य से भी जुड़े रहे हैं। आप कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों के विजेता रहे हैं। आप देशांतर, अंडमान ऑफ़ लाँग यात्रावृत्त, साहित्य संवर्धन यात्रा-4 के संपादक तथा कुछ पुस्तकों के अनुवादक भी रहे हैं।

हिंदी के सेवा में आपके उत्कृष्ट कार्यों के लिए आपको विश्व हिंदी सम्मान से सम्मानित किया गया।

श्री तम्जनसोबा आओ

गुवाहाटी विश्वद्यालय से स्नातक तथा राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा से राष्ट्रभाषा रत्न की उपाधि प्राप्त करने वाले श्री तम्जनसोबा आओ हिंदी अध्यापन और लेखन कार्य से भी जुड़े हुए हैं। हिंदी व्याकरण पर आपकी कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। आप नागालैंड भाषा अकादमी, डिमापुर के अध्यक्ष के रूप में 1980 से राष्ट्रभाषा महाविद्यालय का संचालन कर रहे हैं।

हिंदी की सेवा में आपके उत्कृष्ट कार्यों के लिए आपको विश्व हिंदी सम्मान से सम्मनित किया गया।

डॉ. सुभाष सी. कश्यप

सुविख्यात संविधान विशेषज्ञ डॉ. सुभाष सी. कश्यप को विधि सेवा सम्मान, विशिष्ट सेवा सम्मान, पद्मभूषण विदुर सम्मान जैसे पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। विधि तथा राजनीति विज्ञान की उत्कृष्ट पुस्तकों के लिए आपको मोतीलाल नेहरु पुरस्कार प्रदान किया गया है। आप 37 से अधिक वर्षों तक भारत की संसद से जुड़े रहे हैं तथा सातवीं, आठवीं व नवीं लोकसभा सचिवालय के महासचिव रह चुके हैं। आपने 60 से अधिक पुस्तकें लिखी हैं और 50 खंडों का संपादन किया है।

हिंदी की सेवा में आपके उत्कृष्ट कार्यों के लिए आपको विश्व हिंदी सम्मान से सम्मानित किया गया।

डॉ. सी. भास्कर राव

राँची विश्वविद्यालय के विभिन्न महाविद्यालयों में प्राध्यापक रह चुके डॉ. सी. भास्कर राव अनेक साहित्यिक विधाओं में भी पारंगत हैं। आपके लेखन में विविधता भी विद्यमान रही है तथा आप कथा संग्रह, व्यंग्य, कहानी लेखन से भी जुड़े हुए हैं। आपको तुलसी सम्मान, राधाकृष्ण पुरस्कार, साहित्य शिरोमणि सम्मान से भी सम्मानित किया गया है।

हिंदी की सेवा में आपके उत्कृष्ट कार्यों के लिए आपको विश्व हिंदी सम्मान से सम्मानित किया गया।

डॉ. के. सी. अजय कुमार

विद्याचास्पति की उपाधि प्राप्त करने वाले डॉक्टर के.सी. अजय कुमार वरिष्ठ प्रबंधक, राजभाषा और कॉरपोरेशन बैंक में मुख्य प्रबंधक राजभाषा के रूप में कार्य कर चुके हैं। हिंदी में आपकी 4 मौलिक कृतियाँ तथा 2 अनुदित कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं। आपने हिंदी से मलयालम में 18 रचनाओं का अनुवाद किया है। आपको हिंदीतर भाषी हिंदी लेखक पुरस्कार और साहित्य अकादमी अनुवाद पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है।

हिंदी की सेवा में आपके उत्कृष्ट कार्यों के लिए आपको विश्व हिंदी सम्मान से सम्मानित किया गया।

डॉ. अजय कुमार पटनायक

हिंदी के प्राध्यापक, कई पुस्तकों के रचियता डॉक्टर अजय कुमार पटनायक संपादक कार्य से भी जुड़े रहे हैं। आपने हिंदी साहित्य सुधा, वरमाला, हिंदी साहित्य सरोवर, हिंदी साहित्य लहरी जैसी प्रसिद्ध पुस्तकों का संपादन किया है। आपको डालमिया पुरस्कार, हिंदी सेवी सम्मान आदि पुरस्कारों से भी सम्मानित किया जा चुका है।

हिंदी की सेवा में आपके उत्कृष्ट कार्यों की लिए आपको विश्व हिंदी सम्मान से सम्मानित किया गया।

अपरिहार्य कारणों से निम्नलिखित 5 हिंदी-सेवी समारोह में उपस्थित नहीं हो सके। इन्हें बाद में सम्मानित किए जाने का निर्णय लिया गया।

श्री बशीर अहमद मयूख

श्री बशीर अहमद मयूख उन प्रतिभासंपन्न कवियों में से हैं, जिन्होंने बाल्यकाल से ही काव्य लेखन प्रारंभ कर दिया था। आप केंद्रीय हिंदी समिति के सदस्य रह चुके हैं। आपको प्रथम विश्व हिंदी सम्मलेन, नागपुर में वेदों का हिंदी में अनुवाद के लिए विशिष्ट सम्मान दिया गया था। इसके अतिरिक्त आपको और कई प्रतिष्ठित पुरस्कार भी प्राप्त हुए हैं।

प्रो. धर्मपाल मैनी

विद्यावाचस्पति की उपाधि प्राप्त करने वाले प्रोफ़ेसर डॉक्टर धर्मपाल मैनी शोध प्रक्रिया, भारतीय संस्कृति, अमेरिकन इतिहास व संस्कृति के प्रख्यात ज्ञाता हैं। आपने अमेरिका, इग्लैंड तथा ऑस्ट्रेलिया में अध्यापन का कार्य भी किया है। आपकी 40 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। आप भारत सरकार, पंजाब, उत्तर प्रदेश, हिमाचल, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान और बिहार राज्य की सरकारों द्वारा कई बार पुरस्कृत व सम्मानित किए जा चुके हैं।

श्री ब्रजकिशोर शर्मा

श्री ब्रजकिशोर शर्मा राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर में विधि संकाय के प्राध्यापक रहे हैं। आपने राजभाषा विधायी आयोग के सचिव के रूप में भी अपनी सेवाएँ दी हैं। आपने 1969 में समस्त अधिनियमों का हिंदी में प्राधिकृत पाठ प्रकाशित कराया। भारतीय संविधान को संस्कृत सहित 14 भारतीय भाषाओं में प्रकाशित करने का श्रेय भी आपको प्राप्त है। आपको बिहार, दिल्ली, मध्यप्रदेश, कर्नाटक एवं राजस्थान राज्य द्वारा कई बार सम्मानित किया जा चुका है।

प्रो. रमेश चंद्र शाह

प्रख्यात हिंदी कवि, निबंधकार, चिन्तक तथा आलोचक प्रोफ़ेसर चंद्र शाह निराला सृजन पीठ के निदेशक और राधाकृष्णन पीठ के प्रोफेसर रहे हैं। आपके 11 उपन्यास, 5 कहानी-संग्रह, 2 नाटक, 10 निबंध-संग्रह आदि प्रकाशित हो चुके हैं। आपको साहित्य अकादमी पुरस्कार, व्यास सम्मान, राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार, राष्ट्रीय मैथिलीशरण गुप्त सम्मान आदि से पुरस्कृत किया गया था। आपको वर्ष 2004 में पद्मश्री पुरस्कार से भी अलंकृत किया जा चुका है।

श्रीमती मालती जोशी

विगत साठ वर्षों से हिंदी लेखन में साधनारत, पचास पुस्तकों की रचयिता श्रीमति मालती जोशी को भारत सरकार द्वारा पद्मश्री से अलंकृत किया गया है। आपने अंग्रेजी, रुसी और जापानी भाषाओं में अनुवाद के माध्यम से अपना साहित्य विदेशी पाठकों तक पहुँचाया। हिंदी साहित्य जगत की सभी प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में आपकी कहानियों तथा लघु उपन्यास को स्थान दिया गया है। भारत सरकार द्वारा पद्मश्री से अलंकृत किए जाने के अतिरिक्त आपको हिंदी सेवी सम्मान, मैथीलीशरण गुप्त राष्ट्रीय सम्मान, ओजस्विनी सम्मान इत्यादि पुरस्कारों से भी सम्मानित किया गया है।

‘विश्व हिंदी सम्मान’ से नवाज़े गए विश्व के हिंदी-सेवी

विदेश

प्रो. जावेद खोलोव
ताज़ाकिस्तान

प्रो. जावेद खोलोव ने हिंदी एवं उर्दू भाषा में ताजिक नेशनल विश्वविद्यालय से स्नातक डिग्री प्राप्त की। आपने हिंदी व उर्दू में कई किताबें लिखी हैं जो ताज़ाकिस्तान, जर्मनी, रूस और भारत में प्रकाशित हुई हैं। शैक्षिक कॉलेज, पंजीकंत में निदेशक पद पर नियुक्त आप भारतीय अध्ययन केंद्र में हिंदी भाषा की सेवाएँ दे रहे हैं।

‘हिंदी गाँव से भारत तक’, उपन्यास का गठन, हिंदी उपन्यास का आधा मूल्यांकन’ नामक पुस्तकों के माध्यम से उनके द्वारा प्रदर्शित उत्कृष्ट कार्यों के लिए उन्हें विश्व हिंदी सम्मान से नवाज़ा गया।

डॉ. राम प्रसाद परसराम
त्रिनिदाद और टोबैगो

डॉ. राम प्रसाद परसराम हिंदू परंपरा के पोषक, प्रचारक एवं संरक्षक हैं।

आपने धार्मिक और सांस्कृतिक कार्यों के माध्यम से हिंदी के प्रयोग की वकालत की और ‘रामचरितमानस’ के अध्ययन–अध्यापन के माध्यम से छात्रों को हिंदी शब्दावली और उसके प्रयोग के लिए प्रोत्साहित किया है।

आपके हिंदी विचार, उच्चायोग द्वारा प्रकाशित यात्रा पत्रिका के हिंदी खंड में प्रकाशित हुए हैं।

आपको भारतीय उच्चायोग पोर्ट ऑफ स्पेन द्वारा विशिष्ट हिंदी सेवा सम्मान से सम्मानित किया जा चुका है।

हिंदी की सेवा में आपके उत्कृष्ट कार्यों के लिए विश्व हिंदी सम्मान से सम्मानित किया गया।

डॉ. इनेस फ़ार्नेल
जर्मनी

डॉ. इनेस फार्नेल इंस्टीट्यूट ऑफ इंडोलॉजी एवं तिब्बतिन स्टडीज़, यूनिवर्सिटी ऑफ़ गोटिंगन, जर्मनी में 2003 से हिंदी तथा आधुनिक भारत विषय में असिस्टेंट प्रोफेसर हैं।

आपने भीष्म साहनी के उपन्यासों में सामाजिक परिवेश तथा यथार्थवादी पद्धति पर शोध पत्र लिखने के साथ-साथ मनु भंडारी और ऊषा प्रियंवदा द्वारा लिखित लघु कथाओं पर भी शोध किया है तथा जर्मन के विभिन्न पत्र और पत्रिकाओं में हिंदी से संबंधित लेख भी प्रकाशित किए हैं।

हिंदी की सेवा में आपके उत्कृष्ट कार्यों के लिए विश्व हिंदी सम्मान से सम्मानित किया गया।

डॉ. अन्ना चेल्नोकोवा
रूस

केंद्रीय हिंदी संस्थान, दिल्ली से हिंदी में उच्च दक्षता डिप्लोमा प्राप्त डॉ. अन्ना चेल्नोकोवा रूस के सेंट पीटर्सवर्ग राजकीय विश्वविद्यालय में भारतीय भाषा विभाग में सह प्राध्यापिका के रूप में कार्यरत हैं। आपके शोध का विषय ‘आधुनिक भारत में रामायण’ है। आपने रूसी, अंग्रेजी और हिंदी भाषा में 30 से अधिक वैज्ञानिक लेख लिखे हैं।

आपने हिंदी भाषा, व्याकरण, आधुनिकतावाद एवं भारतीय साहित्य और भारतीय शिष्टाचार पर व्याख्यान दिए हैं।

हिंदी जगत में आपके उत्कृष्ट योगदान के लिए विश्व हिंदी सम्मान से सम्मानित किया गया।

डॉ. गलीना रूसोवा सोकोलोवा
बुल्गारिया

डॉ. गलीना रूसोवा सोकोलोवा का जन्म 12 जनवरी 1965 को पीटर्सवर्ग, रूस में हुआ था। आपने सोफ़िया विश्वविद्यालय से भारतीय भाषा में स्नातकोत्तर की डिग्री प्राप्त की है। आप मध्यकालीन भारतीय साहित्य, हिंदी स्वर विज्ञान, हिंदुत्व और इस्लाम की प्रस्तावना पर अध्यापन किया है। आपने कबीर के दोहे, सूरदास के सूर-सागर और नंददास के भ्रमर गीत का हिंदी से बुल्गेरियन भाषा में अनुवाद किया है।

आपको भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद द्वारा उत्कृष्ट अध्येता का पुरस्कार प्रदान किया जा चुका है।

हिंदी की सेवा में आपके उत्कृष्ट कार्यों के लिए विश्व हिंदी सम्मान से सम्मानित किया गया।

डॉ. उदय नारायण गंगू
मॉरीशस

डॉ. उदय नारायण गंगू का जन्म 20 जनवरी, 1943 को मॉरिशस में हुआ था। आपने लंदन विश्वविद्यालय से अंग्रेज़ी और संस्कृत तथा कैंब्रीज विश्वविद्यालय से हिंदी, हिंदुत्व और संस्कृत विषयों में शिक्षा ग्रहण की है।

आपने हिंदी, संस्कृत, रामायण, वेद और आर्य समाज से संबंधित कई सम्मेलनों में भाग लिया है। आपने हिंदी में लगभग 15 पुस्तकें प्रकाशित की हैं।

आपको भारत की ओर से वर्ष 2003 में आर्य रत्न का पुरस्कार तथा हिंदी वाचन संघ से हिंदी रत्न का पुरस्कार दिया गया है।

हिंदी की सेवा में आपके उत्कृष्ट कार्यों के लिए विश्व हिंदी सम्मान से सम्मानित किया गया।

श्री हनुमान दूबे गिरधारी
मॉरीशस

श्री हनुमान दूबे गिरधारी का जन्म 6 अक्टूबर 1933 को हुआ था। आप मॉरीशस में वयोवृद्ध अध्यापक हैं।

भारतीय विद्या भवन के प्रयासों का ही नतीजा है कि आज मुंबई में लगभग 1000 विद्यार्थी संस्कृत का अध्ययन कर रहे हैं। आप वर्ष 1965 से हिंदी प्रचारिणी सभा के सदस्य के रूप में अपनी मातृभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं।

हिंदी की सेवा में आपके उत्कृष्ट कार्यों के लिए विश्व हिंदी सम्मान से सम्मानित किया गया।

श्री केसन बधू
मॉरीशस0-----

आप मॉरीशस ब्रोडकास्टिंग कॉरपोरेशन के न्यूज़ प्रभाग के कार्यकारी निदेशक हैं।

आपने रामायण का फ्रांसिसी भाषा में तथा अभिमन्यु अनत की प्रसिद्ध पुस्तक ‘लाल पसीना’ और उनके एक अन्य उपन्यास ‘एक बीघा प्यार’ का फ्रांसिसी भाषा में अनुवाद किया है। आप मॉरीशस के कई विद्यालयों के पाठयक्रम में शामिल हिंदी पाठ्यपुस्तक ‘नवीनतम हिंदी पथ प्रदर्शिका’ के लेखक भी हैं।

हिंदी की सेवा में आपके उत्कृष्ट कार्यों के लिए विश्व हिंदी सम्मान से सम्मानित किया गया।

सुश्री उन गू ली
दक्षिण कोरिया

सुश्री उन गू ली का जन्म 16 जून, 1962 को हुआ था। आप हँकूक विदेशी अध्ययन विश्वविद्यालय के हिंदी एवं भारतीय अध्ययन विभाग में प्रोफ़ेसर हैं। आपने दिल्ली विश्वविद्यालय से हिंदी स्नातकोत्तर तथा आगरा विश्वविद्यालय से विद्यावाचस्पति की उपाधि अर्जित की है।

आपने ‘एन इंट्रोडक्शन टू इंडियन स्टडीज़’, ‘मल्टीमीडिया हिंदी’, ‘इंडियन माइथोलॉजी’, ‘इंडियन सिनेमा’, ‘एन इंट्रोडक्शन टू हिंदूइज़्म और एन इंट्रोडक्शन टू इंडियन कल्चर’ नामक पुस्तकें लिखी हैं। आपने भारतीय साहित्य, मुंशी प्रेमचंद की चुनिंदा लघु कथाओं और निर्मला का अनुवाद किया है।

हिंदी की सेवा में आपके उत्कृष्ट कार्यों के लिए विश्व हिंदी सम्मान से सम्मानित किया गया।

श्री गोपाल ठाकुर
नेपाल

श्री गोपाल ठाकुर ने त्रिभुवन विश्वविद्यालय, काठमांडू से भाषा विज्ञान में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की है। आपने रेडियो नेपाल में 13 वर्षों तक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

आप नेपाल से निकलने वाली हिंदी पत्रिकाओं ‘हिमालिनी’ व ‘द पब्लिक’ के लिए हिंदी में लेख लिखते रहे हैं। आपने कई हिंदी गीतों की रचना की है।

आप नेपाल में हिंदी की मशाल जलाए रखने के लिए समर्पित हैं।

हिंदी की सेवा में आपके उत्कृष्ट कार्यों के लिए विश्व हिंदी सम्मान से सम्मानित किया गया।

सुश्री सिलेंगामा चानरब
मंगोलिया

सुश्री सिलेंगामा चानरब ने मसूरी, भारत में सनातन धर्म इंटर कॉलेज (हिंदी माध्यम विद्यालय) से शिक्षा ग्रहण की तथा उलानबटोर, मंगोलिया से भाषा व साहित्य में स्नातकोत्तर की डिग्री प्राप्त की है।

आप मंगोलिया स्थित भारतीय दूतावास द्वारा संचालित भारतीय सांस्कृतिक केंद्र, मंगोलिया में हिंदी भाषा के अध्यापक के रूप में कार्यरत हैं। आप बच्चों को भारतीय शिक्षा प्रदान करती हैं।

हिंदी की सेवा में आपके उत्कृष्ट कार्यों के लिए विश्व हिंदी सम्मान से सम्मानित किया गया।

श्री नेमानी बैनीवालू
फ़िजी

श्री नेमानी बैनीवालू हिंदी भाषा के विद्वान हैं। आपने हिंदी के विद्वान, प्रसारणकर्ता, मीडिया व्यक्तित्व, अनुवादक और हिंदी प्रेमी समाज सेवक के रूप में भाषाओं और समुदायों को जोड़ने का अद्वितीय काम किया है।

आप एक प्रसारक के रूप में कई वर्षों तक फ़िजी ब्रोडकास्टिंग कॉर्पोरेशन के टी.वी. चैनलों में हिंदी के कार्यक्रम प्रस्तुत करते रहे हैं। आपने वर्ष 2016 में अंतरराष्ट्रीय रामायण सम्मेलन के अवसर पर राम कथा का ई-ताऊकेई भाषा में अनुवाद करने के साथ-साथ ‘टीयर्स इन पाराडाइज़’ का अनुवाद भी किया है। आपने वर्ष 2000 में फ़िजी में संक्रमण काल के दौरान सौंपे गए विश्वास और सद्भावना स्थापित करने का कार्य बखूबी संपन्न किया है।

हिंदी की सेवा में आपके उत्कृष्ट कार्यों के लिए विश्व हिंदी सम्मान से सम्मानित किया गया।

श्री ब्रेसिल नगोडा विथान
श्री लंका

श्री ब्रेसिल नगोडा विथान श्रीलंका में स्थित सबरागामुवा विश्वविद्यालय में हिंदी के प्राध्यापक हैं।

आपने सितंबर 2006 से हिंदी के व्याख्याता, शिक्षक और परीक्षक के रूप में हिंदी भाषा की सेवा की है। आपने ‘डिविपीडुमा’ नामक पुस्तक में हिंदी की लघु कहानियों का सिंहली भाषा में अनुवाद किया है और हिंदी में कई लघु कहानियाँ तथा उपन्यास लिखे हैं। आपने हिंदी कवि नागार्जुन पर शोध कार्य किया है और आपके द्वारा प्रकाशित पुस्तकों में ‘उम्मीद व तकदीर’ नामक उपन्यास, ‘व्यावहारिक हिंदी अभ्यास पुस्तिका’, ‘नागार्जुन’, ‘श्रीलंका में विदेशी भाषा के रूप में हिंदी और हिंदी का अतीत, वर्तमान और भविष्य’ इत्यादि शामिल हैं।

हिंदी की सेवा में आपके उत्कृष्ट कार्यों के लिए विश्व हिंदी सम्मान से सम्मानित किया गया।

श्रीमती सुनीता नारायण
न्यूज़ीलैंड

श्रीमती सुनीता नारायण ने न्यूजीलैंड में बच्चों को हिंदी पढ़ाने के लिए सुविधाएँ विकसित करने हेतु लंबे समय तक पूर्ण निष्ठा एवं प्रतिबद्धता प्रदर्शित की है। आपने न्यूजीलैंड में वैलिंगटन हिंदी स्कूल की स्थापना एवं विकास में अग्रणी भूमिका निभाई है। आप नियमित रूप से हिंदी में पुस्तकों एवं पत्रिकाओं का प्रकाशन भी करती रही हैं। आपने भारतीय संस्कृति के संवर्धन में भी गहन रूचि ली है।

इस प्रकार आपने न्यूज़ीलैंड हिंदी शिक्षण के लिए अनुकूल परिवेश तैयार किया।

हिंदी की सेवा में आपके उत्कृष्ट कार्यों के लिए आपको विश्व हिंदी सम्मान से सम्मानित किया जाता है।

आपके उक्त कार्य के लिए विश्व हिंदी सम्मान से सम्मानित किया गया।

अपरिहार्य कारणों से निम्नलिखित हिंदी-सेवी समारोह में उपस्थित नहीं हो सकीं। इन्हें भी बाद में सम्मानित किए जाने का निर्णय लिया गया।

प्रो. अलीसन बुच
संयुक्त राज्य अमेरिका

प्रो. अलीसन बुच न्यू यॉर्क के प्रतिष्ठित कोलंबिया विश्वविद्यालय में हिंदी और भारतीय साहित्य के एसोसिएट प्रोफ़ेसर हैं। आप पिछले 20 वर्षों से हिंदी का अध्यापन कर रही हैं।

आपकी पुस्तक ‘पोएट्री ऑफ़ किंग्स’ में प्राचीन मुगल और राजपूत साहित्य के बारे में हिंदी अध्ययन को एक नए रूप में प्रस्तुत किया गया है। आप स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के लिए हिंदी साहित्य की कक्षा भी आयोजित करती हैं।

'विश्व हिंदी सम्मान' से नवाज़े गए विश्व के हिंदी-सेवी

विदेश

प्रो. काज़ुहिको मचीदा
जापान

प्रो. काज़ुहिको मचीदा का जन्म 14 सितंबर, 1951 को हुआ था। आपने टोक्यो विश्वविद्यालय से हिंदी में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की है। साथ ही साथ आप इलाहाबाद विश्वविद्यालय, भारत से भी स्नातकोत्तर की डिग्री प्राप्त की है।

आपने मॉरीशस में भोजपुरी लोकगीतों पर एक पुस्तक का संपादन किया। आप जापानी-हिंदी-अंग्रेजी शब्दकोष के लेखक और संपादक रहे हैं।

हिंदी की सेवा में आपके उत्कृष्ट कार्यों के लिए विश्व हिंदी सम्मान से सम्मानित किया गया।

डॉ. रत्नाकर नराले
कनाडा

डॉ. रत्नाकर नराले का जन्म 11 सितंबर 1942 को नागपुर, भारत में हुआ था। आपने नागपुर से स्नातक और पुणे विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर की डिग्री प्राप्त की है। आप रायर्सन विश्वविद्यालय, टोरंटो में हिंदी के प्रोफ़ेसर हैं।

कई भाषाओं के ज्ञाता डॉ. नराले की 'संगीत श्री रामायण', 'संगीत श्रीकृष्णायन', 'संगीत गीता दोहावली', 'गीता का शब्दकोष और अनुक्रमणी', 'गीता दर्शन' इत्यादि कई पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। आपने भारत से बाहर विदेशों में प्रवासी भारतीयों और मॉरीशस, ट्रिनिदाद टोबैगो, गयाना, सूरीनाम, फ़िजी इत्यादि देशों में भारतीय मूल के अंग्रेजी भाषी लोगों में हिंदी व भारतीय संस्कृति के प्रसार का दायित्व अपने ऊपर लिया है।

आपको वर्ष 2017 में कनाडा के 150वीं जयंती महोत्सव पर हिंदी रत्न पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

हिंदी की सेवा में आपके उत्कृष्ट कार्यों के लिए विश्व हिंदी सम्मान से सम्मानित किया किया गया।

श्री ई मादे धर्मयश
इंडोनेशिया

श्री ई मादे धर्मयश का जन्म 8 अगस्त 1959 को बाली, इंडोनेशिया में हुआ था। आपने केंद्रीय हिंदी संस्थान, नई दिल्ली से डिप्लोमा कोर्स तथा हंसराज कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय से कला विज्ञान में स्नातक और महिदोल विश्वविद्यालय से सांस्कृतिक विकास में स्नातकोत्तर की डिग्री प्राप्त की।

आपने नैतिकता, धर्म और आध्यात्म पर 30 से अधिक किताबें तथा इंडोनेशियाई समाचार पत्र-पत्रिकाओं में 500 से अधिक लेख लिखे हैं। आप इंडोनेशिया की सबसे बड़ी हिंदू पत्रिका मीडिया हिंदू में लेख लिखने के साथ-साथ पंचतंत्र, हितोपदेश, चाणक्य शास्त्र और भागवद् गीता का हिंदी से इंडोनेशिआई भाषा में अनुवाद किया है। आपने 'अहिंसा, धर्म और शाकाहार' तथा 'गाय की महिमा' नामक दो उत्कृष्ट पुस्तकें भी लिखी हैं।

हिंदी की सेवा में आपके उत्कृष्ट कार्यों के लिए विश्व हिंदी सम्मान से सम्मानित किया किया गया।

'विश्व हिंदी सम्मान' से सम्मानित हुईं हिंदी-सेवी संस्थाएँ

भारत

सी.डैक (पुणे)

प्रगत संगणन विकास केन्द्र, सी.डैक इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय की एक स्वायत्त वैज्ञानिक संस्था है जो सूचना प्रौद्योगिकी, इलेक्ट्रॉनिक्स तथा संबद्ध क्षेत्रों में अनुसंधान कार्य करती है।

सी. डैक ने 1991 में भारत के पहले सुपर कंप्यूटर परम का निर्माण किया और आज यह पेटा फ्लॉप सुपर कंप्यूटर का निर्माण कर रहा है।

सी-डैक ने भारतीय भाषा कम्प्यूटिंग के क्षेत्र में भी अग्रणी कार्य किया है। जिसमें नई टेक्नोलॉजी जिस्ट 9000 चिप, नये फॉन्टस, ओसीआर टेक्नोलॉजी,वर्तनी एवं व्याकरण जाँच टेक्नोलॉजी, अनुवाद टेक्नोलॉजी, भाषा अन्वेषण टेक्नोलॉजी, स्पीच टेक्नोलॉजी शामिल है। आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस का प्रयोग करते हुए सी-डैक ने राजभाषा विभाग के लिए मंत्र राजभाषा, लीला राजभाषा, श्रुतलेखन राजभाषा, प्रवाचक राजभाषा और ई-महाशब्दकोश जैसे अनेक समाधानों तथा इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के लिए अनुवादक्ष, चित्रांकन और 'भारत' डोमेन का निर्माण किया है। राज्य सभा सचिवालय में मंत्र राज्य सभा सिस्टम का प्रयोग किया जा रहा है। अनुवादक्ष उपकरण से स्वास्थ्य एवं पर्यटन क्षेत्र के दस्तावेजों का अंग्रेज़ी से 8 भारतीय भाषाओं में अनुवाद किया जा सकता है। लीला राजभाषा हिन्दी सीखने के लिए एक स्वयं शिक्षण पैकेज है जिसके द्वारा प्रयोगकर्ता 15 भारतीय भाषाओं के माध्यम से प्रबोध, प्रवीण एवं प्राज्ञ के पाठ्यक्रम सीख सकते है।

हिंदी भाषा के सॉफ्टवेयर विकास और कंप्यूटरीकरण के लिए किए गए उत्कृष्ट कार्यों के लिए सी-डैक (पुणे) को विश्व हिंदी सम्मान से सम्मानित किया जाता है।

सी.डैक. (पुणे) के महानिदेशक श्री हेमंत दरबारी को सी.डैक. की ओर से विश्व हिंदी सम्मान प्राप्त करने के लिए आमंत्रित किया गया।

विदेश

तोक्यो यूनिवर्सिटी ऑफ़ फ़ॉरेन स्टडीज़

टोक्यो का तोक्यो यूनिवर्सिटी ऑफ फॉरेन स्टडीज विदेश के बारे में शिक्षण को समर्पित जापान का सबसे पुराना संस्थान है। इस विश्वविद्यालय का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को विश्व भर की विभिन्न भाषाओं, संस्कृतियों एवं समाजों के बारे में गहन ज्ञान व समझ प्रदान करना है। इसकी स्थापना सन् 1856 में 'बान्शो शिराबेशो' विदेशी प्रलेख शोध संस्थान नाम से एक सरकारी अनुवाद ब्यूरो के रूप में की गई थी। विश्वविद्यालय में लगभग 40 भाषा संबंधी विभाग हैं जिनके अंतर्गत छात्रों को विविध भाषाओं में प्रशिक्षित किया जाता है। विश्वविद्यालय ने विश्व के अन्य कई विश्वविद्यालयों के साथ साझेदारी स्थापित की है ताकि छात्रों के शैक्षणिक अवसरों को विस्तृत किया जा सके।

हिन्दी भाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यों के लिए तोक्यो यूनीवर्सिटी ऑफ़ फ़ॉरेन स्टडीज़ के उपाध्यक्ष प्रो. सुकिरो इतो को तोक्यो यूनिवर्सिटी ऑफ़ फ़ॉरेन स्टडीज़ की ओर से सम्मान ग्रहण करने के लिए आमंत्रित किया गया।

हिंदी प्रचारिणी सभा, मॉरीशस

हिंदी प्रचारिणी सभा मॉरीशस की एक प्रसिद्ध सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक संस्था है। इसकी स्थापना हिंदी भाषा साहित्य तथा हिंदी संस्कृति के संरक्षण के उद्देश्य से 12 जून, 1926 को तिलक विद्यालय के रूप में की गई थी। "भाषा गई तो संस्कृति गई'' इसका आदर्श वाक्य है। मॉरीशस में आगमन के 100 साल के भीतर ही भारतीय श्रमिकों ने अपनी भाषा और संस्कृति के संरक्षण के लिए एक नई चेतना के साथ योजनाबद्ध तरीके से काम करना शुरू कर दिया था। हिंदी प्रचारिणी सभा उसी नई चेतना के साथ जुड़े असंख्य लोगों के साझे प्रयासों का फल है। इस संस्था की बहुआयामी गतिविधियों का ही फल है कि आज मॉरीशस में प्राथमिक स्तर से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक हिंदी पढ़ाई जाती है।

हिंदी प्रचारिणी सभा लगभग 190 प्राथमिक, सायंकालीन व सप्ताहांत कक्षाओं का संचालन करती है।

भाषा और संस्कृति के प्रचार-प्रसार में निरत हिंदी प्रचारिणी सभा व सभा के प्रधान अध्यक्ष श्री यंतुदेव बुधु को हिंदी प्रचारिणी सभा मॉरीशस की ओर से विश्व हिंदी सम्मान प्राप्त करने के लिए आमंत्रित किया गया।

आर्यसभा मॉरीशस

आर्य सभा, मॉरीशस की एक प्रमुख सामाजिक संस्था है, जिसकी स्थापना वर्ष 1903 में 'आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम से हुई थी। इसका पंजीकरण वर्ष 1913 में आर्य परोपकारिणी सभा के नाम से हुआ था। आर्य सभा मुख्य रूप से वेद प्रचार कार्य, विद्या प्रचार कार्य, सेवा कार्य, भवन एवं मंदिर निर्माण कार्य और प्रशासन कार्य में निरत है। इसमें 400 शाखाएँ और 75 आर्य युवक संघ और 160 महिला समाज सहित 305 पुरुष समाज हैं।

यह सभा प्रतिष्ठित प्राथमिक विद्यालयों तथा हिंदी सांध्य विद्यालयों का भी संचालन कर रही है और इसने ऋषि दयानंद संस्थान में ध्रुवानंद पुस्तकालय और लेखागार की स्थापना भी की है। यह वर्ष 1965 से ही डी ए वी द्वारा समर्थित 2 माध्यमिक विद्यालयों और एक डी ए वी तृतीयक महाविद्यालय का भी संचालन कर रहा है। हिंदी, सांस्कृतिक तथा धार्मिक मामलों के शिक्षण हेतु सभा लगभग 200 सांध्य विद्यालयों का भी संचालन कर रहा है जिसमें हजारों छात्र-छात्राएँ हिंदी का अध्ययन कर रहे हैं।

आर्य सभा को हिंदी के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए विश्व हिंदी सम्मान से सम्मानित किया जाता है आर्य सभा के अध्यक्ष, श्री हरिदेव रामधनी को आर्य सभा की ओर से सम्मान ग्रहण करने के लिए आमंत्रित किया गया।

अपरिहार्य कारणों से निम्नलिखित संस्था के प्रतिनिधि समारोह में उपस्थित नहीं हो सके। संस्था को बाद में सम्मानित किए जाने का निर्णय लिया गया।

दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, भारत

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा एक प्रमुख हिन्दी सेवी संस्था है जो भारत के दक्षिणी राज्यों तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, केरल और कर्नाटक में आजादी के काफी पहले से हिन्दी के प्रचार-प्रसार का कार्य कर रही है ।भारत में महात्मा गांधी के हिन्दी प्रचार आंदोलन के परिणामस्वरूप दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा की स्थापना तत्कालीन मद्रास (चेन्नई) नगर के गोखले हॉल में डॉ॰सी.पी. रामास्वामी अय्यर की अध्यक्षता में एनी बेसेन्ट ने की थी। गांधीजी जी इसके आजीवन सभापति रहे। यह सभा शिक्षा विभाग के मार्गदर्शन में हिंदी अध्यापकों और प्रचारकों के प्रशिक्षण के लिए प्राथमिक, मध्यमा, राष्ट्रभाषा प्रवेशिका, विशारद, प्रवीण और हिंदी प्रशिक्षण नामक परीक्षाओं का संचालन करती है। सभा की ओर से एक स्नातकोत्तर अध्ययन एवं अनुसंधान विभाग और एक उच्च शिक्षा और शोध संस्थान भी स्थापित किया गया है। इस सभा के प्रकाशनों में हिन्दी समाचार, मासिक पत्रिका 'दक्षिण भारत', त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका केरल भारती, मासिक हिंदी पत्रिका पूमाकुंभ, मासिक हिंदी पत्रिका भारत वाणी शामिल है।

अहिंदी भाषी क्षेत्रों में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए उत्कृष्ट कार्यों के लिए दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा को विश्व हिंदी सम्मान दिया जाता है।

प्रतिभागियों की प्रतिक्रियाएँ

'विश्व में हिंदी पहुँचाई, युग-युग जियो एस.बी.आई.'

विश्व के सबसे बड़े बैंक भारतीय स्टेट बैंक (SBI) द्वारा 11वें विश्व हिंदी सम्मेलन में 'विश्व में हिंदी पहुँचाई युग युग जियो एस.बी.आई.' नाम से प्रदर्शनी लगाई गई है। यह प्रदर्शनी भारतीय स्टेट बैंक के विश्व भर में 42 करोड़ हिंदी भाषी ग्राहकों, 8 लाख शेयरधारकों, लगभग 3 लाख कर्मचारियों और 24000 से अधिक शाखाओं की ओर से लगाई गई है। इसमें भारतीय स्टेट बैंक द्वारा हिंदी को विश्व के कोने कोने में पहुँचाने के लिए प्रकाशित पत्रिकाओं, पुस्तकों और बैंक के उत्पादों और सेवाओं की जानकारी हिंदी में प्रदर्शित किया गया है। इस प्रदर्शनी को विश्व भर से पधारे हज़ारों हिंदी सेवियों द्वारा देखा और सराहा गया है।

- प्रदीप कुमार भूल

सम्मेलन हिंदी भाषा को विस्तार देने में अहम् भूमिका प्रदान करेगा

यह अत्यंत सुखद स्थिति है कि 11वाँ विश्व हिंदी सम्मेलन मॉरीशस में हुआ। यह विश्वस्तरीय सम्मेलन हिंदी भाषा को विस्तार देने में अहम् भूमिका प्रदान करेगा ऐसा भी विश्वास है। विश्व की प्रमुख भाषा के रूप में हिंदी का अपना महत्व है। विश्व भर के विश्वविद्यालयों में जन संचार माध्यमों की सहायता लेकर हिंदी शिक्षण हेतु बृहद् प्रयास जारी है। यह बोलचाल की भाषा हिंदी और संस्कृति के गठबंधन को केंद्रीय बिंदु बनाकर भाषा प्रौद्योगिकी और मल्टीमीडिया का प्रयोग कर भूमण्डलीकृत दौर में हिंदी के शिक्षण को विश्व स्तर पर सक्षम बनाने का बहुमूल्य प्रयास इस सम्मेलन का महनीय बिंदु है। यही इस सम्मेलन की महत्ता है।

- प्रो. रामकली सराफ़

'लोकभाषा और लोक संस्कृति के विकास में ही निहित है हिंदी का विकास

हिंदी के प्रचार-प्रसार को बढ़ाना हो तो हिंदी को उदार होना होगा। हिंदी भाषा बची तो साहित्य बचेगा। साहित्य तब बचेगा, जब भाषा बचेगी। शुद्धता के चक्कर में हम भाषा में अशुद्धता निकालने लगते हैं। तब लिखने तथा बोलनेवाला व्यक्ति असहज महसूस करने लगता है और वह डर व संकोच में भाषा का परित्याग कर देता है। ऐसे में भाषा बोलने समझनेवाले कम हो जाते हैं। भाषा को जस का तस स्वीकार करना चाहिए और समय के साथ बदलाव को भी स्वीकार करना चाहिए।

- अमरजीत मिश्र

हिंदी भाषा एवं उसकी संस्कृति का विकास विश्व के संदर्भ में अत्यंत उपयोगी

11वाँ विश्व हिंदी सम्मेलन अत्यंत सफल रहा। हिंदी के बहुआयामी विकास की अपार संभावनाओं के साथ यह सम्मेलन सफलतापूर्वक समाप्त हुआ। हिंदी भाषा एवं उसकी संस्कृति का विकास विश्व के संदर्भ में अत्यंत उपयोगी है । इसके द्वारा भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के प्रचार-प्रसार में पर्याप्त सहायता मिलेगी। संपूर्ण विश्व में मैत्री भाव एवं पारस्परिक सहयोग की दृष्टि से यह आयोजन अपना ऐतिहासिक महत्व स्थापित करेगा।

- प्रो. श्रीनिवास पाण्डेय

सर्वश्रेष्ठ हिंदी शिक्षक पुरस्कार

(मॉरीशस के प्राथमिक एवं माध्यमिक हिंदी शिक्षक)